

ऋग्वेद मंत्र (2.9.2)

एक वैज्ञानिक और आध्यात्मिक विश्लेषण

प्रस्तुति: ऋषि विश्वामित्र विद्या फाउन्डेशन

त्वं दूतस्त्वमु नः परस्पास्त्वं वस्य आ वृषभ प्रणेता ।
अग्ने तोकस्य नस्तने तनूनामप्रयुच्छन्दीद्यद्धोधि गोपाः ॥

पद-अर्थ (Word Meanings)

त्वम्	तू (परमेश्वर/अग्नि)
दूतः	संदेशवाहक (ज्ञान पहुँचाने वाला)
नः	हमारा
परःपाः	पार ले जाने वाला, रक्षक
वस्यः	श्रेष्ठ धन (ज्ञान/ऐश्वर्य) का दाता
वृषभ	कामनाओं को पूर्ण करने वाला (बलिष्ठ)
प्रणेता	उत्तम मार्ग पर ले जाने वाला (पथप्रदर्शक)
अग्ने	ज्ञानस्वरूप परमात्मा
तोकस्य	सन्तान का
तने	कुल-परम्परा (पौत्र आदि) का
तनूनाम्	हमारे शरीरों का

अप्रयुच्छन्	प्रमादरहित होकर (सावधानी से)
दीद्यत्	प्रकाशित होता हुआ
बोधि	रक्षा कर (जागृत हो)
गोपाः	रक्षक

भाष्य (Commentary)

1. सायण भाष्य (पारम्परिक/आध्यात्मिक)

सायण के अनुसार, यहाँ 'अग्नि' का आह्वान यज्ञ के मुख्य देव के रूप में किया गया है। वे कहते हैं: हे अग्नि! आप हमारे यज्ञ में दूत बनकर देवताओं को बुलाएं, आप हमारे रक्षक (परस्पा) बनें और हमें श्रेष्ठ धन प्रदान करें। आप हमारे पुत्रों और पौत्रों (तोक-तन) और हमारे शरीरों की निरंतर रक्षा करें।

2. दयानन्द सरस्वती का भाष्य (आर्ष/वैचारिक)

महर्षि दयानन्द ने 'अग्नि' को 'विद्वान्' और 'परमात्मा' के अर्थ में लिया है। उनके अनुसार, यह मंत्र उस विद्वान् या परमात्मा की प्रार्थना है जो:

- हमें अज्ञान से ज्ञान की ओर ले जाने वाला 'दूत' है।
- जो श्रेष्ठ गुणों (वस्यः) का प्रणेता है।
- जो सन्तान (तोक) और कुल (तन) की वृद्धि में सहायक और रक्षक है।

वे 'अप्रयुच्छन्' (बिना प्रमाद के) के माध्यम से यह संदेश देते हैं कि मनुष्य को भी अपने कर्तव्यों के प्रति सजग रहना चाहिए।

3. ऐतरेय ब्राह्मण का संदर्भ

ऐतरेय ब्राह्मण (1.28) में कहा गया है: "अग्निर्वे देवानां गोपाः" (अग्नि ही देवताओं का रक्षक है)। यह मंत्र पुष्टि करता है कि अग्नि (चेतना/ज्ञान) ही वह शक्ति है जो हमारी आंतरिक और बाह्य संपदाओं का संरक्षण करती है। जब हम अग्नि को अपने कुल और शरीर का 'गोपा' (रक्षक) मानते हैं, तो इसका अर्थ है कि हम अपने जीवन को ज्ञान और सत्य के प्रकाश में सुरक्षित कर रहे हैं।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण (Scientific Approach)

इस मंत्र को यदि हम 'ऊर्जा और संरक्षण' के सिद्धांत से देखें, तो इसके वैज्ञानिक अर्थ अत्यंत गहरे हैं:

अग्नि (Energy/Transformation): विज्ञान में अग्नि ऊर्जा का पर्याय है। ब्रह्मांड में सब कुछ ऊर्जा के रूपांतरण से चलता है। 'अग्नि' यहाँ उस मूल ऊर्जा का प्रतीक है जो 'दूत' बनकर सूचना का आदान-प्रदान करती है (जैसे विद्युत चुम्बकीय तरंगें)।

संरक्षण का सिद्धांत (Conservation): 'परस्पा' (रक्षक) का अर्थ ऊर्जा के संरक्षण नियम (Law of Conservation of Energy) से जोड़ा जा सकता है। जिस प्रकार अग्नि (ऊर्जा) पदार्थ का रूप बदलकर उसे बनाए रखती है, उसी प्रकार परमात्मा की शक्ति भौतिक और जैविक अस्तित्व को बनाए रखती है।

विकास का क्रम (Genetics/Evolution): 'तोक' (पुत्र) और 'तने' (पौत्र) का उल्लेख 'वंशानुगत सुरक्षा' (Genetic Integrity) की ओर संकेत करता है। 'दीद्यत्' (प्रकाशीय ऊर्जा) निरंतर सक्रिय रहने वाली कोशिकाएं (Cells) और जैव-ऊर्जा (Bio-energy) को इंगित करती है।

सतर्कता (System Stability): 'अप्रयुच्छन्' का अर्थ है 'बिना किसी त्रुटि के'। एक सुव्यवस्थित तंत्र (System) वही है जो बिना किसी Error (प्रमाद) के कार्य करे। हमारा शरीर और समाज, प्रकृति के नियमों (ऋत) का पालन करके ही सुरक्षित रह सकता है।

निष्कर्ष: यह मंत्र केवल एक प्रार्थना नहीं, बल्कि एक प्रबंधन विज्ञान (Management Science) का सूत्र है। यह हमें सिखाता है कि जो ज्ञान (अग्नि) को अपना दूत बनाता है और अपने कार्यों में 'अप्रमाद' (सावधानी) बरतता है, उसकी रक्षा स्वयं प्रकृति (गोपा) करती है।

ऋषि विश्वामित्र विद्या फाउन्डेशन

आचार्य कपिल

सम्पर्क (Contact): 8756390767